5

रामायण–V

पिछले पाठ में आपने पढ़ा कि राम ने बालि का वध कर दिया और हनुमान सीता की खोज में लंका गये। हनुमान ने सीता को अशोक वन में देखा। हनुमान को रावण के सैनिकों ने पकड़ दिया। उसके बाद लंका को आग के हवाले कर दिया। सीता की सूचना देने के लिए हनुमान वापस राम के पास लौट आये। इस पाठ में सीता की अग्नि परीक्षा तथा राम राज्य की विशेषताओं के विषय में पढ़ेंगे।

उद्देश्य

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे–

- इस पाठ के श्लोकों का शुद्ध संस्कृत में उच्चारण कर पाने में;
- रामायण की संबंधित कहानी बता पाने में;
- रामायण के पात्रों के विषय में जान पाने में; और
- रामायण की कहानी अपने शब्दों में लिख पाने में।

5.1 श्लोक 81-100

ru xRok ijÈ y³dk gRok jko.kekgoA
jke% lhrkeuçkl; ijk ohMke ikxerAA1-1-81AA

लंका में जाकर राम ने रावण का वध कर दिया। सीता जी को प्राप्त कर राम ब्रीडा (शर्म रूपी उलसन) में पड़ गये। जन सभा में उन्होंने सीता को कठोर वचन कहे।

rkeokp rrk jke% i#"k tulalfnA
ve";ek.kk lk lhrk foo'k Toyu lrhAA1-1-82AA

उन कठोर वचनों को सहन नहीं कर पा रही सीता ने जलती आग में प्रवेश कर लिया। तब अग्निदेव की साक्षी से सीता को निष्पाप माना गया।

rrk·fXuopukRlhrk KkRok foxrdYe"kkeA
cHkk jkeL lEçâ"V% ift rLlonor%AA1-1-83AA

de.kk ru egrk =ykD; lpjkpjeA
lnoF"kx.k r"V jk?koL; egkReu%AA1-1-84AA

सभी देवताओं से पूजित राम प्रसन्न हुए। राम द्वारा रावण वध से तीनों लोकों, चराचर जगत, देव और ऋषि संतुष्ट हुए। इसके बाद विभीषण को लंका का राज सिंहासन दे दिया गया।

vfHkf"kP; p y³dk;k jk{klUæ foHkh"k.keA
nrnR;Lrnk jkek foToj% çeekn gAA1-1-85AA

norkH;k oj çkI; leRFkkI; p okujkuA
v;kè;k çfLFkrk jke% i"id.k lâ}r%AA1-1-86AA

राम कृतार्थ हो, संताप से मुक्त होकर, खुश होते हुए देवताओं से वरदान प्राप्त कर, मृत वानरों को जीवित कर, सुग्रीव और विभिषण को साथ लेकर पुष्पक विमान से अयोध्या के लिए रवाना हुए। और साथ पराक्रमी राम भारद्वाज ऋषि के आश्रम में गये।

Hkj}ktkJea xRok jkeLlR;ijkØe%A
HkjrL;kfUrda jkek gueUra 0;lt;rAA1-1-87AA

iujk[;kf;dka tYiUlxholfgr'p l%A
i"ida rRlek#á ufUnxke ;;k rnkAA1-1-88AA

वहां पहुँचकर राम ने हनुमान को भरत के पास भेजा। सुग्रीव से अपनी पूर्व बातों को कहते हुए पुष्पक पर सवार हो राम नन्दिग्राम पहुँचे। वहां पर राम ने अपने भाईयों के साथ त्रप विसर्जन (बड़े हुए बालों को कटवाना) किया।

ufUnxkes tVk fgRok Hkkr'fHkL lfgrk·u?k%A
jkeLlhrkeuçkI; jkT; iujokIrokuAA1-1-89AA

सीता को प्राप्त कर राम ने राज्य को पुनः प्राप्त किया अर्थात राजगद्दी पर बैठे। उनके राज सिंहासन पर विराजने पर सभी प्रजानन आन्नदित और खुश हो गये तथा धर्मनिष्ठावान हो गये।

çâ"Vefnrk ykdLr"V% i"VL I èkkÆed%A
fujke;k ájkx'p nÆHk{kHk;oÆtr%AA1-1-90AA

राम राज्य में (राम के राजा बनने पर) न तो कोई शारीरिक व्यथा थी, न मानसिक और न ही किसी की अकाल (दुर्भिक्ष) का ही भय था। किसी को कभी कोई पुत्रशोक भी नहीं हुआ।

u i=ej.k fdf¥pí{;fUr i#"kk% DofprA
uk;Z'pkfoèkok fuR;a Hkfo";fUr ifroÙkr%AA1-1-91AA

u pkfXutä Hk;a fdf¥pUukIlq eTtfUr tUro%A
u okrtä Hk;a fdf¥pUukfi Tojdra rFkkAA1-1-92AA

राम राज्य में न कोई स्त्री विधवा होती है और सभी स्त्रियां पतिव्रता हैं। न किसी के घर में कभी आग लगती है और न ही कोई जल में डूब कर मरता है।

इसी तरह न तो कभी किसी आंधी तूफान से नुकसान होता है और न ही कभी ज्वर आदि महामारी का भय रहता है। न तो कोई भूखा ही सोता है और न ही किसी के घर में चोरी होती है।

u pkfi {kqnHk;a r= u rLdjHk;a rFkkA
uxjkf.k p jk"Vkf.k èkuèkkU;;qrkfu pAA1-1-93AA

राष्ट्र और राजधानी (नगर) धन धान्य से पूर्ण रहते हैं। सब नागरिक इस तरह से जीवन व्यतीत करते हैं जैसे सतयुग में लोग बिताया करते थे।

**fuR;a çefnrkLlo ;Fkk dr;qx rFkkA
vÜoeèk'krfj"Vok rFkk cgqlqo.kZd%AA1-1-94AA**

राम ने सौ से अधिक अश्वमेघ यज्ञ पूर्ण किये है और बहुत सा स्वर्ण दान में दिया है। नारद जी बाल्मीकि से कहते हैं कि करोड़ों गायों का दान करने वाले यशस्वी राम बैकुण्ठ में जायेंगे।

**xok dkVî;qr nRok cãykd ç;kL;frA
vl[;;; èku nRok ckã.kH;k egk;'kk%AA1-1-95AA**

इसके बाद आगे कहते हैं कि राम ब्राह्मणों को अपरिमित धन (दान स्वरूप) देकर राजवंश की सौ गुना से अधिक उन्नति करेंगें।

**jkto'kkU'krxq.kkULFkkif;";fr jk?ko%A
pkrqo.;Z p ykd fLeu Lo Lo èke fu;k{;frAA1-1-96AA**

राम दशवर्षसहस्र और दशवर्षशत तक चारों वर्णों के लोगों को धर्म में नियोजित करेंगें।

**n'ko"kZlglkf.k n'ko"k'krkfu pA
jkek jkT;eqikflRok cãykd ç;kL;frAA 1-1-97AA**

इस प्रकार शासन कर (लोगों की सेवा कर) राम ब्रह्मलोक में जायेंगे। इस पवित्र, पाप नाशक, पुण्य प्रदान करने वाले वेदों के तुल्य राम के चरित्र (रामचरित) का जो पठन करता है वह सभी प्रकार के पापों से मुक्त हो जाता है।

bn ifo= iki?u i|.;: on'p lfEereA
;% iBækepfjr loiki% çeP;rAA1-1-98AA

आयु में वृद्धि करने वाली रामायण की इस कथा को जो कोई मनुष्य श्रद्धापूर्वक पढ़ता है वह पुत्र, पौत्र और भाई–बंधुओं सहित स्वर्ग में सम्मानित होता है।

,rnk[;kuek;q";: iBukek;.k uj%A
li=ik=LIx.k% çR; Lox egh;rAA1-1-99AA

iBfU} tk okx"kHkRoeh;kr
L;kR{kf=;k Hkfeifrroeh;krA
of.kXtu% i.;QyRoeh;kr
tu'p 'kæk·fi egRoeh;krAA1-1-100AA

यदि इस रामायण को ब्रह्मण पढता है तो वह शास्त्रों में पारंगत हो, क्षत्रिय पढ़े तो वह पृथ्वीपति (पृथ्वी को जीतने वाला) हो, वैश्य पढ़े तो वह अपने कार्यों में उन्नति को प्राप्त करे और शुद्र पढ़े तो उसका लोगों में महत्व (श्रेष्ठत्व) बढ़े।

bR;k"k Jheækek;.k okYehdh; vkfndkO;s ckydk.Ms
¼Jheækek;.kdFkk l³{ksik uke½
çFke% lx%AA

पाठगत प्रश्न 5.1

1. सीता से राम ने कठोर शब्द कहां कहे?
2. जब राम ने कटुवचन बोले तो सीता ने क्या किया?
3. रावण की मृत्यु के उपरांत लंका का राजा कौन बना?
4. राम नन्दिग्राम कैसे पहुँचे?

आपने क्या सीखा

- राम का रावण के साथ युद्ध।
- राम और सीता का पुर्नमिलन।
- लंका के राजा के रूप में विभिषण का राज्याभिषेक।
- राम का पास अयोध्या लौटना।

पाठांत प्रश्न

1. जब सीता ने अग्नि में प्रवेश किया तो क्या हुआ?
2. राम राज्य में अयोध्या की कैसी स्थिति थी?

उत्तरमाला

5.1

1. देव सभा में
2. उसने आग में प्रवेश कर लिया
3. विभिषण
4. पुष्पक विमान के द्वारा